

रामानुजन : एक विलक्षण प्रतिभा

शशिधर कपूर

यदि आप स्कूली बच्चों से पूछें कि क्या वे सी.बी. रामन को जानते हैं, तो बहुत सम्भावना है कि उनका उत्तर हां में हो। मगर जरा रामानुजन के बारे में पूछिए। स्थिति बिल्कुल विपरीत नज़र आएगी। इसका एक कारण तो यही है कि गणित में नोबेल पुरस्कार नहीं होता; जो तत्काल व्यापक मान्यता पाने का माध्यम होता है। दूसरे यह कि विज्ञान के नॉन-अप्लाइड यानी गैर-व्यावहारिक पहलुओं को मान्यता बड़ी मुश्किल से मिलती है।

विकसित समाजों में ऐसे व्यक्तियों का भी समुचित स्थान होता है जो विज्ञान का अध्ययन विज्ञान के लिए करते हैं, किसी व्यावहारिक उपयोग की दृष्टि से नहीं। जहां व्यावहारिक रूप से उपयोगी विज्ञान का अध्येता यथास्थिति से ही संतुष्ट रहता है या कुछ छुटपुट सुधार करता है, वहीं विशुद्ध विज्ञान के ये स्वप्नदृष्टा प्रगति की लम्बी छलांग मारते हैं। विकसित समाजों में ऐसे व्यक्तियों को रोजमर्रा की चिंताओं से मुक्त रखकर अपने पसंद के क्षेत्र में काम करने की आजादी दी जाती है।

एक रूढ़िवादी वैष्णव परिवार में 22 दिसम्बर 1887 को जन्मे श्रीनिवास रामानुजन अयंगर एक अचम्भा थे। उनके स्कूल के प्राचार्य ने तो यहां तक कहा था कि 100 में से 100 अंक उनके आकलन के लिए निहायत अपर्याप्त हैं। बचपन से ही उनमें एक जिद्दी प्रवृत्ति थी। जो काम वे नहीं करना चाहते, उसे किसी हालत में नहीं करते-चाहे स्कूल जाने की बात हो या किसी विषय को पढ़ने की। उनकी जिन्दगी का पहला अहम मोड़ वह था जब 1903 में उनके कॉलेज के मित्रों ने उन्हें जॉर्ज शूब्रिज कार की पुस्तक *असिनॉप्सिस ऑफ एलीमेन्टरी रिज़ल्ट्स इन प्योर एण्ड अप्लाइड मैथेमैटिक्स* भेंट की। इसके बाद रामानुजन सब कुछ छोड़कर गणित के दीवाने हो गए। नतीजा वही हुआ जो होना था। हाईस्कूल के अंकों के आधार पर जो छात्रवृत्ति मिली थी वह 1904 में जाती रही। बाहरवीं

कक्षा में वे फेल हो गए। 1905 में फिर बैठे, फिर फेल हो गए।

इस समय उनके व्यक्तित्व का एक और पहलू सामने आया: वे अपनी सार्वजनिक छवि को लेकर बहुत संवेदनशील थे। दूसरी बार फेल होने पर वे भागकर विशाखापट्टनम चले गए। गणित का सौभाग्य कि उनके माता-पिता एक महीने में ही उन्हें ढूँढकर वापस ले आए। 1906 व 1907 में उन्होंने फिर कोशिश की परन्तु पहले से भी बुरी तरह फेल हुए। लिहाजा पिछले वर्षों का मेधावी छात्र 1907 में शैक्षिक कंगाल बन गया। इस समय उनके साथ वही किया गया जो भटके हुए पुरुषों को रास्ते पर लाने के लिए भारतीय परिवारों में किया जाता है - 1909 में उनकी शादी साढ़े नौ साल की जानकी से कर दी गई। बहरहाल वह मायके में ही रही।

रामानुजन के साथ शारीरिक दिक्कतें भी कम नहीं रहीं - 1910 में उनका हाइड्रोसील का ऑपरेशन हुआ। इस समय तक रामानुजन अपने गणितीय कार्य का पहला भाग (1904-1907) संकलित कर चुके थे। यही हमें प्रथम प्रकाशित नोटबुक के रूप में उपलब्ध है। लेकिन कॉलेज डिग्री के बिना न तब नौकरी मिलती थी न आज मिलती है। वे नौकरी की भीख मांगते दर-दर भटकते रहे। और यह सिद्ध करने के



लिए कि वे फालतू आदमी नहीं हैं, उनके पास था ही क्या? वही नोटबुक जिसमें छितरी बातें कोई नहीं समझता था! सराहने की बात तो जाने ही दें।

बेशक उनकी संजीदगी, मासूमियत तथा आकर्षक व्यक्तित्व के कारण लोग उनकी बातें सुनते थे, उन्हें पसंद भी करते थे किन्तु किसी ने उन्हें ठोस मदद न दी। अन्ततः नेल्लोर के कलेक्टर रामचंद्र राव ने 25 रुपए महीना देने का वायदा किया। इस 25 रुपए के आधार पर वे मद्रास में रहने लगे। किन्तु जल्दी ही यह पैसा कम पड़ने लगा और एक बार फिर रामानुजन नौकरी ढूँढने निकल

पड़े। एक बार फिर रामचंद्र राव ने मदद की और उनकी सिफारिश मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के प्रमुख फ्रांसिस स्पिंग से की। 1912 में रामानुजन तृतीय श्रेणी के क्लर्क बनकर 30 रुपए महीना कमाने लगे। पोर्ट ट्रस्ट में उनके अधिकारी नारायण अय्यर थे, जो आगे चलकर रामानुजन के कार्य के प्रमुख समर्थक रहे। रामचंद्र, स्पिंग तथा नारायण, तीनों गणित में रुचि रखते थे। तीनों ही शौकिया और पेशेवर गणितज्ञ के बीच की श्रेणी के थे।

पोर्ट ट्रस्ट की नौकरी में रामानुजन को गणित के लिए काफी वक्त मिल जाता था और स्पिंग व नारायण उन्हें निरुत्साहित नहीं करते थे। इस दौरान रामानुजन ने अपना गणितीय कार्य दक्षिण भारत के गई गणित प्राध्यापकों को तथा कई सहानुभूति पूर्ण ब्रिटिश अधिकारियों को दिखाया। धीरे-धीरे पोर्ट ट्रस्ट में यह बात फैलने लगी की रामानुजन में कुछ खास है। सर फ्रांसिस व अन्य ब्रिटिश अधिकारियों के सामने सवाल थे कि यदि रामानुजन खास है, तो कितना? और है, तो वे इस बारे में क्या कर सकते हैं? वह सनकी है या जीनियस? कुछ कहते कि वह छंटा हुआ चालबाज है तो कुछ यह गारन्टी लेने को तैयार थे कि वह सनकी तो नहीं ही है।

1911 में रामानुजन अपना पहला शोध पत्र *जर्नल ऑफ इंडियन मैथेमेटिकल सोसाइटी* में प्रकाशित करवाने में सफल हुए। इस सोसाइटी की स्थापना रामास्वामी अय्यर नामक एक डिप्टी कलेक्टर ने की थी। संपादक नारायण अयंगर (सेंट्रल कॉलेज बैंगलोर के गणित प्राध्यापक) ने शोध पत्र को समझ में आने योग्य बना दिया था। विषय था बर्नोली संख्याएं।

1912 में अकाउंटेंट जनरल, ग्रिफिथ ने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के प्रो. जॉन हिल को पत्र लिखकर रामानुजन के काम के बारे में उनकी राय जाननी चाही। प्रो. हिल ने काम के बारे में तो कोई टिप्पणी नहीं की, किन्तु

शैली में सुधार का सुझाव जरूर दिया। कम से कम इससे एक बात तो सिद्ध हुई कि रामानुजन जीनियस न सही पर कम से कम पागल तो नहीं हैं। इस समय तक शायद रामानुजन यह समझ चुके थे कि भारतीय गणित की दुनिया उनके लिहाज से बहुत बौनी है और उन्हें सम्भवतः पश्चिम में ही सहानुभूति मिलेगी। उनके दोस्तों ने भी यही सलाह दी। लिहाजा उसने कैम्ब्रिज के आग्रणी गणितज्ञों को अपने काम के बारे में लिखा। उसने बेकर को लिखा जिसने ना कह दिया। अन्ततः जी.एच. हार्डी ने हामी भरी।



जी.एच. हार्डी

हामी भरने से पहले हार्डी ने अपने सहकर्मी और उस समय के जाने माने गणितज्ञ लिटिलवुड से सलाह ली थी। हालांकि रामानुजन के काम को देखकर हार्डी इतना तो समझ ही गए थे कि रामानुजन में कुछ दम तो है मगर वे और पुष्टि कर लेना चाहते थे। खासकर वे यह जानना चाहते थे कि रामानुजन ने ये परिणाम किन विधियों से प्राप्त किए। रामानुजन ने थोड़ी हिचक दिखाई। हार्डी को लगा कि शायद रामानुजन सोच रहे हैं कि वे (हार्डी) सारा श्रेय ले जाएंगे। अतः हार्डी ने रामानुजन से इस बाबत दो टूक सवाल किया। इस पर रामानुजन ने कुछ सबूत भेजे। हालांकि ये सबूत बहुत कम थे लेकिन हार्डी को यकीन हो गया कि रामानुजन को इंग्लैण्ड बुलाना जरूरी है। रामानुजन ने इंकार कर दिया क्योंकि उन्हें डर था कि सात समन्दर पार जाने पर उन्हें जात बाहर कर दिया जाएगा। इस पर हार्डी नाराज हो गए और कुछ महीनों के लिए दोनों के बीच संवाद टूट गया।

कुछ माह बाद कैम्ब्रिज के एक गणितज्ञ व हार्डी के

पोर्ट ट्रस्ट की नौकरी में रामानुजन को गणित के लिए काफी वक्त मिल जाता था और स्पिंग व नारायण उन्हें निरुत्साहित नहीं करते थे। इस दौरान रामानुजन ने अपना गणितीय कार्य दक्षिण भारत के गई गणित प्राध्यापकों को तथा कई सहानुभूति पूर्ण ब्रिटिश अधिकारियों को दिखाया। धीरे-धीरे पोर्ट ट्रस्ट में यह बात फैलने लगी की रामानुजन में कुछ खास है। सर फ्रांसिस व अन्य ब्रिटिश अधिकारियों के सामने सवाल थे कि यदि रामानुजन खास है, तो कितना? और है, तो वे इस बारे में क्या कर सकते हैं? वह सनकी है या जीनियस?

रामानुजन के काम का एक बड़ा हिस्सा 'अनन्त शृंखला' से सम्बंधित था। कहा जाता है कि अनन्त शृंखला उनका पहला प्यार था। अनन्त शृंखला का अर्थ होता है; बीजगणितीय सूत्रों की एक शृंखला जिसमें एक पैटर्न हो, जिन्हें आपस में निरंतर जोड़ते जाते हैं। आम व्यक्ति सोचेंगे कि अनन्त संख्याएं होने से जोड़ भी अनन्त होगा किन्तु ऐसी कई शृंखलाएं हैं जिनका जोड़ 'निश्चित' होता है।

सहकर्मी नेविले दक्षिण भारत के दौरे पर आने वाले थे। हार्डी ने उन्हें रामानुजन को पटाने का काम सौंपा। नेविले को ज़्यादा दबाव नहीं डालना पड़ा। रामानुजन के अनुसार नामगिरि देवी ने उनकी मां को सपने में कहा कि वे बेटे के मार्ग में बाधा न बनें। देवी ने उन्हें भी जाने की इजाजत दे दी। सपना सच हो न हो मगर अन्ततः रामानुजन मार्च 1914 में कैम्ब्रिज के लिए रवाना हो गए।

बार-बार फेल होकर रामानुजन के दिल में परीक्षाओं का डर बैठ चुका था। कैम्ब्रिज जाने से पहले उन्होंने हार्डी के सामने शर्त रखी कि मैं किसी परीक्षा में नहीं बैठूंगा। शर्त मंजूर कर ली गई।

1914 के पूरे वर्ष में उन्होंने हार्डी के साथ मिलकर एक शोधपत्र तैयार किया। 1914 के अन्त तक पूरा कैम्ब्रिज रामानुजन को भारत के गणित जीनियस के बतौर जानने लगा था। महालनोबिस को गर्व था कि वे कैम्ब्रिज में रामानुजन के समकालीन रहे। महालनोबिस ने ही आगे चलकर भारतीय सांख्यिकी संस्थान की स्थापना की थी।

दरअसल रामानुजन की कहानी हार्डी की कहानी से घुली मिली है। हार्डी ने भी अपना स्थान अपनी विलक्षण बुद्धि की बढौलत प्राप्त किया था। वे क्रिकेट के दीवाने थे। वे बहुत कुशाग्र बुद्धि के दृढ़ व्यक्ति थे। सर्वोत्तम से कमतर कुछ भी स्वीकार करना उन्हें आता ही नहीं था। साथ ही वे श्रेष्ठ लेखक व व्याख्याता भी थे। कोई ज्ञान जो व्यावहारिक यानी अप्लाइड हो, उसे वे थोड़ा कमतर मानते थे। शरलॉक होम्स की रहस्य कथा *द केस ऑफ फिलॉसफर्स रिंग* में हार्डी और रामानुजन भी दो पात्र थे।

1914 में एक ऐसी घटना घटी जिसने समूची दुनिया में अकादमिक कार्य पर ब्रेक लगा दिया। यह घटना थी प्रथम विश्व युद्ध। परन्तु रामानुजन तक इस युद्ध की आंधियां 1916 से पहले तक नहीं पहुंची। परिस्थितियां कुछ ऐसी थीं कि वे इस युद्ध के प्रभावों से परे रहे और

यह विडम्बना ही है कि उनका सबसे उपजाऊ गणितीय दौर 1914-1916 का ही रहा।

रामानुजन के काम का एक बड़ा हिस्सा 'अनन्त शृंखला' से सम्बंधित था। कहा जाता है कि अनन्त शृंखला उनका पहला प्यार था। अनन्त शृंखला का अर्थ होता है; बीजगणितीय सूत्रों की एक शृंखला, जिसमें एक पैटर्न हो, जिन्हें आपस में निरंतर जोड़ते जाते हैं। आम व्यक्ति सोचेंगे कि अनन्त संख्याएं होने से जोड़ भी अनन्त होगा किन्तु ऐसी कई शृंखलाएं हैं जिनका जोड़ 'निश्चित' होता है। मसलन $1 + 1/2 + 1/4 + 1/8 + \dots$ का जोड़ 2 के करीब होता है। आप इस पैटर्न में जितनी ज़्यादा संख्याएं जोड़ेंगे, योग 2 के ज़्यादा नजदीक होगा। यह न समझ लें कि हर अगली संख्या छोटी होने से निश्चित जोड़ आ जाएगा : $1 + 1/2 + 1/3 + \dots$ वाली शृंखला में ऐसा नहीं होता।

ऐसा लगता है जैसे π (पाई) एक ऐसी संख्या है जिसके अंकों में कोई क्रम नहीं है किन्तु लीबनिज जैसे महान गणितज्ञों ने दिखा दिया कि पाई को भी एक आसान सी शृंखला द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। रामानुजन ने भी ऐसी शृंखलाएं बताईं। लीबनिज की शृंखला के विपरीत रामानुजन की शृंखला बहुत कम अंकों में ही निश्चित योग दे देती है।

रामानुजन इतने अलग-थलग रहे कि उन्हें गणित की कई नवीनतम पद्धतियों (मसलन जटिल संख्याओं) की जानकारी तक न थी। उन्हें प्रमेय को सिद्ध करने और उसके लिए ज़रूरी कठोर मापदण्डों जैसी बातों का इल्म तक न था। अतः हार्डी ने इस खामी को दूर करने का बीड़ा उठाया। साथ ही हार्डी नहीं चाहते थे कि रामानुजन की सृजनात्मक प्रकृति या उनके जोश में कमी आए। लेकिन बदलाव तो आया। धीरे-धीरे रामानुजन अपने काम में ज़्यादा व्यवस्थित होते गए।

1915 में रामानुजन ने *अत्यधिक मिश्र संख्याओं*

सम्बन्धी अपना शोधपत्र प्रकाशित किया जिसके आधार पर उन्हें कैम्ब्रिज वि.वि. ने शोध आधारित बी.ए. की उपाधि दी। सरल शब्दों में कहें, तो मिश्र संख्याएं वे हैं जिन्हें 1 के अलावा कई और संख्याओं से भाग दिया जा सकता है। जैसे 24 को 8 अलग-अलग संख्याओं (1, 2, 3, 4, 6, 8, 12, 24) से भाग दिया जा सकता है। 24 से छोटी ऐसी अन्य कोई संख्या नहीं है जिसे 7 अलग-अलग संख्याओं से विभाजित किया जा सके, 8 की तो बात ही जाने दें। अतः 24 को अत्यधिक मिश्र संख्या कहा जाता है।

इसी प्रकार से रामानुजन ने एक और समस्या के समाधान को दिशा दी। किसी भी संख्या को छोटी संख्याओं के योग के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है। जैसे 4 को प्रदर्शित करने के पांच तरीके हो सकते हैं: $1+3$, $1+1+2$, $2+2$, $1+1+1+1$, $0+4$ । क्या कोई ऐसा सूत्र हो सकता है जिससे आसानी से पता लगाया जा सके कि किसी संख्या के लिए 'योगों' की कितनी किस्में होंगी। रामानुजन ने एक तरीका बताया जो एकदम सही तो न था किन्तु इसमें समाधान का बीज छुपा था।

आगे चलकर हार्डी व रामानुजन ने संयुक्त रूप से इस सूत्र में संशोधन किया जो एक हद तक सही उत्तर देता था। बीस साल बाद इसी सूत्र में और सुधार करके हैंस रेडमेकर ने इसे सटीक बना दिया। यह काम इतने महत्व का था कि रामानुजन का इंग्लैण्ड जाना सिर्फ इसी कारण से सार्थक कहा जा सकता है। इस दौरान घर के साथ रामानुजन का संवाद लगभग खत्म सा हो गया था। सास से तंग आकर उनकी पत्नी मायके चली गई थी। प्रारम्भ में रामानुजन दो साल के लिए गए थे, लेकिन फिर उन्होंने और रुक जाने का फैसला कर लिया था।

वैसे तो रामानुजन ने कई और गणितज्ञों को भी लिखा था, मगर हार्डी ने ही उन्हें पहचाना; आखिर हार्डी में ऐसी क्या बात थी? पहली बात तो यह थी कि हार्डी स्वयं काफी मुश्किलों से ऊपर उठे थे, इसलिए उनके मन में ऐसे

वैसे तो रामानुजन ने कई और गणितज्ञों को भी लिखा था मगर हार्डी ने ही उन्हें पहचाना; आखिर हार्डी में ऐसी क्या बात थी? पहली बात तो यह कि हार्डी स्वयं काफी मुश्किलों से ऊपर उठे थे, इसलिए उनके मन में ऐसे लोगों के प्रति एक सहानुभूति थी। वे रूढ़ियों के विरुद्ध जाने में हिचकते भी नहीं थे और सबसे बड़ी बात यह कि रामानुजन गणित के जिस सूत्र में काम कर रहे थे, हार्डी उसमें सबसे बड़े गणितज्ञ थे।

लोगों के प्रति एक सहानुभूति थी। वे रूढ़ियों के विरुद्ध जाने में हिचकते भी नहीं थे और सबसे बड़ी बात यह कि रामानुजन गणित के जिस सूत्र में काम कर रहे थे, हार्डी उसमें सबसे बड़े गणितज्ञ थे। हालांकि रामानुजन और हार्डी का सम्बंध दोस्ताना तो था, लेकिन वे अंतरंग न थे। रामानुजन का तो कोई और दोस्त ही न था। हिन्दुस्तान के साथ उनका भावनात्मक सम्बंध कमजोर पड़ता गया। कुल मिलाकर नतीजा यह हुआ कि रामानुजन एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर तक भटकते रहे। अलग-अलग बीमारियों की दवा लेते रहे। दूसरी तरफ हार्डी का दबाव था, ज़्यादा से ज़्यादा और

बढ़िया से बढ़िया गणित करने का। अन्ततः वे टी.बी. से ग्रस्त पाए गए। रामानुजन के कठोर शाकाहार तथा जिद ने बात और बिगाड़ दी। लेकिन इस दौरान रामानुजन का गणित कर्म बरकरार रहा। शायद सभी लोग महसूस करने लगे थे कि अब रामानुजन ज़्यादा दिन नहीं जिंएंगे। इसलिए हार्डी चाहते थे कि रामानुजन के काम को जल्द से जल्द मान्यता मिल जाए और वे महसूस करें कि वे सफल हुए हैं।

1917 में रामानुजन का नाम ट्रिनिटी की सदस्यता के लिए प्रस्तावित हुआ किन्तु अन्य लोगों की तरह उन्हें भी पहली बार में नहीं चुना गया। इससे वे और निराश हो गए। परन्तु हार्डी ने रामानुजन को रॉयल सोसाइटी का सदस्य चुनवाने के लिए दुगुने जोश से प्रयास शुरू किए। इस बार वे सफल हुए। ट्रिनिटी की सदस्यता भी इसके बाद मिल गई। भारत में अखबारों में रामानुजन के सम्मान में काफी कुछ छपा। इस सबसे रामानुजन एक बार फिर आशान्वित हो उठे। उनकी सेहत में भी सुधार दिखने लगा।

इसी दौरान एक बार रामानुजन को देखने अस्पताल जाते हुए हार्डी ने टैक्सी का नम्बर (1729) देखा। वे इसी संख्या के बारे में सोचते हुए रामानुजन के कमरे में घुसे। नमस्कार होते-होते ही उन्होंने कहा कि बुरी संख्या

रामानुजन की मृत्यु 26 अप्रैल, 1920 को हुई। उस वक्त वे 33 वर्ष भी पूरे नहीं कर पाए थे। 20 के दशक में रामानुजन की ख्याति चरम पर थी। नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिकशास्त्री एस. चन्द्रशेखर उस ज़माने के बारे में कहते हैं, "उस वक्त हमें गांधी, नेहरू, टैगोर और रामानुजन पर गर्व था।"

है अपशकुन न हो। रामानुजन ने जवाब दिया "नहीं हार्डी, यह तो बहुत दिलचस्प संख्या है। यह वह सबसे छोटी संख्या है जिसे दो संख्याओं के घन के रूप में दो तरह से व्यक्त किया जा सकता है।"

दो घनों के जोड़ से बनी संख्याएं ढूँढना तो आसान है जैसे $2^3+3^3=35$, लेकिन क्या अन्य किन्हीं संख्याओं के घनों का योग भी 35 हो सकता है? नहीं। इसके बाद 1729 ही ऐसी सबसे छोटी संख्या आती है जो दो जोड़ी संख्याओं के घनों के योग के रूप में व्यक्त की जा सकती है (12^3+1^3 तथा 10^3+9^3 दोनों 1729 के बराबर हैं।

1918 के अन्त तक युद्ध खत्म हो चला था और रामानुजन ठीक भी होते जा रहे थे। मार्च 13, 1919 को वे भारत लौटे। वापसी पर उनका भव्य स्वागत किया गया। मद्रास वि.वि. में उन्हें प्राध्यापक का पद दिया। भारत में भी उनके तरह-तरह के इलाज होते रहे; जगह बदलती रही। पर धीरे-धीरे उनकी बीमारी का असर दिमाग पर भी दिखने लगा। वे चिड़चिड़े हो गए। पत्नी जानकी तथा मां कोमलतम्माल के बीच के झगड़ों तथा पैसे के लिए खींचतान ने हालत और बिगाड़ दी। मगर उन्होंने गणित कर्म बन्द न किया। मृत्यु से चार दिन पूर्व तक वे नोट बुक में कुछ न कुछ लिखते रहे। वास्तव में अंत के करीब उन्होंने कुछ बहुत ही सुन्दर काम किए। दुर्भाग्यवश इस दौर के सारे कागजात हार्डी तक न पहुंच सके। इसके बाद 1976 में एक अमरीकी गणितज्ञ जी. एन्ड्रूज ने इन कागजातों को कैम्ब्रिज की रेन्स लाइब्रेरी से खोज निकाला और उन्हें *गुमशुदा नोटबुक* का नाम दिया।



1915 से 1917 के बीच रामानुजन कैमरे के सबसे नज़दीक की इमारत विश्व होस्टल में रहे

रामानुजन की मृत्यु 26 अप्रैल, 1920 को हुई। तब वे 33 वर्ष भी पूरे नहीं कर पाए थे। 20 के दशक में रामानुजन की ख्याति चरम पर थी। नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिक शास्त्री एस. चन्द्रशेखर उस जमाने के बारे में कहते हैं, "तब हमें गांधी, नेहरू, टैगोर और रामानुजन पर गर्व था।"

रामानुजन को गए 8 दशक बीत चुके हैं। सन् 1997 में उनकी जन्म शताब्दी पर बोलते हुए एस रामसेशन का यह सवाल आज भी बड़ा प्रासंगिक है 'आज वि.वि. के कितने रजिस्ट्रार या कुलपति ऐसे हैं जो परीक्षा में फेल हुए किसी व्यक्ति को 2500 रुपए प्रति माह की छात्रवृत्ति देंगे (जो उस समय रामानुजन को मिली छात्रवृत्ति के बराबर है)?' और यह सवाल आज़ादी के 53 साल बाद है जब हम भारतीय प्रतिभा के औपनिवेशिक दमन को दोषी नहीं ठहरा सकते। जवाब है - कोई नहीं। और शायद यही कारण है कि इस देश में फिर कोई रामानुजन पैदा नहीं हुआ। (स्रोत विशेष फीचर्स)

शशिधर कपूर: सेंट स्टीफन्स कॉलेज, दिल्ली से पढ़ाई की हैं। गणित विषय में गहरी रुचि फिलहाल माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय में कार्यरत